खण्ड-7, अंक-1, वर्ष-2019, मु0प्र0 12-32
D.O.I.: 10.22445/avsp.v7i1.4



# पवित्र वनों का जैवविविधता संरक्षण में योगदानः धार जनपद (म0प्र0) के संदर्भ में विशेष अध्ययन

अनसिंह चौहान[1], जाग्रति त्रिपाठी[2] एवं नरपतसिंह डावर[3]
[1]शोधार्थी, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल–462026, म0प्र0, भारत
[2]यूनिक कॉलेज महाविद्यालय, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल–462026, म0प्र0, भारत
[3]शासकीय महाराजा भोज महाविद्यालय, धार–454001, म0प्र0, भारत
ansinghchouhan@gmail.com

प्राप्त तिथि– 29.07.2019, स्वीकृत तिथि–05.10.2019

**सार**– वन हमेशा से ही भारतीय जीवन का अभिन्न अंग रहा है। भारतीय जीवन संस्कृति में प्रकृति के समस्त घटकों सहित वनों को भी महत्वपूर्ण समझा जाता है। यही कारण है कि वनों को न केवल वनस्पति मानते हैं अपितु इन्हें वन देवता के रूप में मान्यता दी गई है। पवित्र वन भी इन्हीं मान्यताओं के प्रतीक हैं। भारत के विभिन्न प्रदेशों में पवित्र वनों को अलग–अलग नामों से जाना जाता है। परन्तु सभी का मुख्य उद्‌देश्य प्रकृति के प्रति अपनी श्रद्धा, आदर तथा संरक्षण का भाव ही रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में म0प्र0 के धार जिले में स्थित पवित्र वनों का अध्ययन किया गया है। शोध अवधि में धार जिले के 34 पवित्र वनों का अध्ययन किया गया। जिसमें 54 कुल के 102 वंश के अर्न्तगत 110 प्रजातियों के पादप देखे गये। जिसमें 56 वृक्ष, 09 झाडियाँ, 14 लताएं, 30 शाक और 01 कवक आदि सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त 48 प्राणियों को भी देखा गया, जिसमें 23 पक्षी, 12 सरीसृप, 07 स्तनधारी और 06 कीट है जो इन पवित्र वनों में आश्रय तथा संरक्षण प्राप्त करते हैं।

**बीज शब्द**– पवित्र वन, जैवविविधता, प्रकृति

## Role of sacred groves in conservation of biodiversity: special study in reference to Dhar district of M.P.

Ansingh Chouhan[1], Jagrati Tripathi[2] and Narpat Singh Dawar[3]
[1]Research Scholar, Barkatullah University, Bhopal-462026, M.P., India
[2]Unique College, Barkatullah University, Bhopal-462026, M.P., India
[3]Govt. Maharaja Bhoj College, Dhar-454001, M.P., India
ansinghchouhan@gmail.com

**Abstract**- Groves have been an integral part of Indian traditions and life style. In Indian culture the forest is an important component among others. This is reason the forest is not only vegetation but acknowledged as God. The sacred groves are symbole of belief. Sacred groves are known with different name in various state of India. All these places have a collective objective of nature's conservation. Present paper deals with study of 34 sacred groves which are situated in Dhar district of M.P. Comprising 110 plants from 54 families belong to 102 genera, including 56 trees, 09 shrubs, 14 climbers, 30 herbs and 01 fungus. Besides 48 animals were also seen which included 23 birds, 12 reptiles, 07 mammals and 06 insects.

**Key words**- Sacred groves, biodiversity, nature

1. **परिचय**– भारत में वन संस्कृति सनातन काल से ही चली आ रही है। हमारे ऋषि मुनियों ने वनों में ही अपनी आराधना की है। मनुष्य जीवन को भी चार भागों में विभाजित कर वानप्रस्थ आश्रम की व्यवस्था बताई गई है। मानव जीवन में वन महत्वपूर्ण स्थान रखते है। यही कारण है कि मानव उसके अस्तित्व से ही वनों को आराध्य मानता है। यह व्यवहार विशेषकर जनजातियों के जीवनचर्या में वर्तमान में भी सहज देखने को मिलता है। पवित्र वन इसके सजीव प्रमाण हैं। वनों के समीप स्थित परंपरागत रूप से सांस्कृतिक मान्यताओं के चलते संरक्षित वन क्षेत्र को पवित्र वन के रूप में जाना जाता है।[1] वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से पवित्र वन वनस्पतियों का भंडार है।[2] इस प्रकार पवित्र वनों के माध्यम से अनेक दुर्लभ तथा देशज पादपों को संरक्षण मिलता है, जिसे नीति निर्धारकों, शोधकर्ताओं शिक्षकों सहित पर्यावरणविदों ने भी माना है। जिसके चलते देशी उपचार पद्धति को भी विशेष बल मिला है। भारत के विभिन्न भागों से 50,000 से अधिक पवित्र वनों की गणना एवं विस्तृत वर्णन किया गया है।[3] इसके अन्तर्गत प्रत्येक वन का नाम, स्थान, तहसील, गाँव की जनसंख्या, भौगोलिक

स्थिति, स्थापना, इतिहास, पवित्र वन के तीज त्योहार एवं रीति–रिवाज, पवित्र वन में संरक्षित वनस्पतियों तथा उसमें देखे जाने वालें प्राणियों को भी सम्मिलित किया है इस क्षेत्र से जुड़ी मान्यताओं सहित उनके परंपरागत तथा धार्मिक संबंधों के चलते पवित्र वनों को अनिवार्यतः पूर्ण सुरक्षा के साथ संरक्षित किया जाता है।[4] पवित्र वनों के अध्ययन के दौरान अनेक शोधकर्ताओं ने पाया कि ये विभिन्न पारिस्थितिक परिस्थितियों में पाये जाकर विभिन्न प्रकार सांस्कृतिक नियमों के अंतर्गत संरक्षित किये जाते हैं।[5] यादव व अन्य[6] ने हरियाणा के महेन्द्रगढ़ जिले के पवित्र वनों में संरक्षित पादप विविधता का अध्ययन किया। ब्रहमा तथा अन्य[7] ने असम के पवित्र वनों का विस्तृत विश्लेषण कर उनका सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में अध्ययन किया। पाण्डे[8] ने भारत में मिलने वाले अनेकों पवित्र पादपों तथा उनसे संबंधित धार्मिक रीति–रिवाज का वर्णन किया। अलक्रोन[9] ने ग्रामीणों के जैवविविधता संरक्षण में योगदान का अध्ययन किया। अनेक राज्यों में बने पवित्र वनों में भगवान का निवास मानकर उसमें लगे वृक्षों का काटना प्रतिबंधित है।[10] चौहान व अन्य[11] ने जनजाति समुदाय अपने दैनिक जीवन में उपयोगी ताड़ी के महत्व का अध्ययन किया गया। चौहान व अन्य[12] ने पावन निकुंज में संरक्षित पेड़–पौधों और जीव–जन्तु का अध्ययन किया गया।

2. **सामग्री एवं विधि**– धार जिले में जनजातियों द्वारा पवित्र वनों को माने जाने वाले पवित्र वनों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न गाँवों में सर्वेक्षण का कार्य किया गया। पेड़–पौधों और जानवरों के अस्तित्व पर संरक्षण की जानकारी एकत्र करने के लिए आदिवासी समुदायों का साक्षात्कार किया गया। अध्ययन तथा विश्लेषण के लिए आवश्यक जानकारी एकत्रण हेतु जिले के विभिन्न स्थलों का भ्रमण किया गया। इस हेतु उचित प्रश्नावली सहित नमूनों का एकत्रण तथा छायाचित्र भी एकत्र किये गये। वानस्पतिक नमूनों हेतु ''उचित हरबेरियम निर्माण विधि'' का अनुसरण किया गया; जिसमें पादप नमूने के उपयोग संबंधी समस्त जानकारी डायरी में लिखकर नमूने का उचित संग्रहण क्रमांक देकर अखबार में दबा दिया गया तत्पश्चात् नमूने के अच्छी तरह सूख जाने पर हरबेरियम शीट पर चस्पा करके उसके संबधित जानकारी अंकित कर मानक पुस्तकों की सहायता से पहचान की गई। इस प्रकार प्राप्त नमूनों के छायाचित्र के साथ–साथ हरबेरियम संग्रह भी किया गया।

धार जनपद, मध्यप्रदेश के पश्चिम भाग में स्थित है; उत्तर में मालवा, विन्ध्याचल रेंज मध्यक्षेत्र में तथा दक्षिण में नर्मदा घाटी भौगोलिक खण्डों में फैला हुआ है। धार जिले की भौगोलिक स्थिति अक्षांश 22°1′ 14′′ से 23° 9 49′′ उत्तर देशान्तर 74°28′ 27′′ से 75° 42′ 43′′ पूर्व तथा क्षेत्रफल 8,153 वर्ग किलोमीटर है। यहाँ की जलवायु सुखद है। वर्षा ऋतु को छोड़कर सामान्यतः शुष्क रहता है। इस जनपद की औसतन वार्षिक वर्षा 833.1 मिमी0 होती है। जिले के दक्षिणी तथा दक्षिणी–पूर्वी भाग में अन्य भागो में से कम वर्षा होती है किन्तु माण्डु क्षेत्र के दक्षिणी भाग में भाग वर्षा अधिक होती है। यहाँ का न्यूनतम तापमान लगभग 10–24 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान लगभग 26.5–41.5 डिग्री सेल्सियस होता है। वर्षा ऋतु को छोड़कर जबकि आर्द्रता अधिक रहती है यहाँ का वातावरण सामान्यतः शुष्क रहता है। 2011 की जनगणना के अनुसार धार जिले की ग्रामीण जनसंख्या 413,221 तथा शहरी जनसंख्या 172,572 है। अर्थात् जिले का लगभग 81.1 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण तथा लगभग 18.9 प्रतिशत शहरी क्षेत्र के अर्न्तगत आता है। इस क्षेत्र में भील, भीलाला, बारेला तथा पटलिया जनजाति निवास करती पायी जाती है। मध्यप्रदेश के 52 जिलों में से धार एक जिला है, इसके अर्न्तगत आठ तहसीलें– बदनावर, डही, धार, धरमपुरी, गंधवानी, कुक्षी, सरदारपुर एवं मनावर, प्रमुख वनस्पतियाँ तथा खनिज आती हैं। धार जिले का वन क्षेत्र 1,28,738.776 हेक्टेयर है।

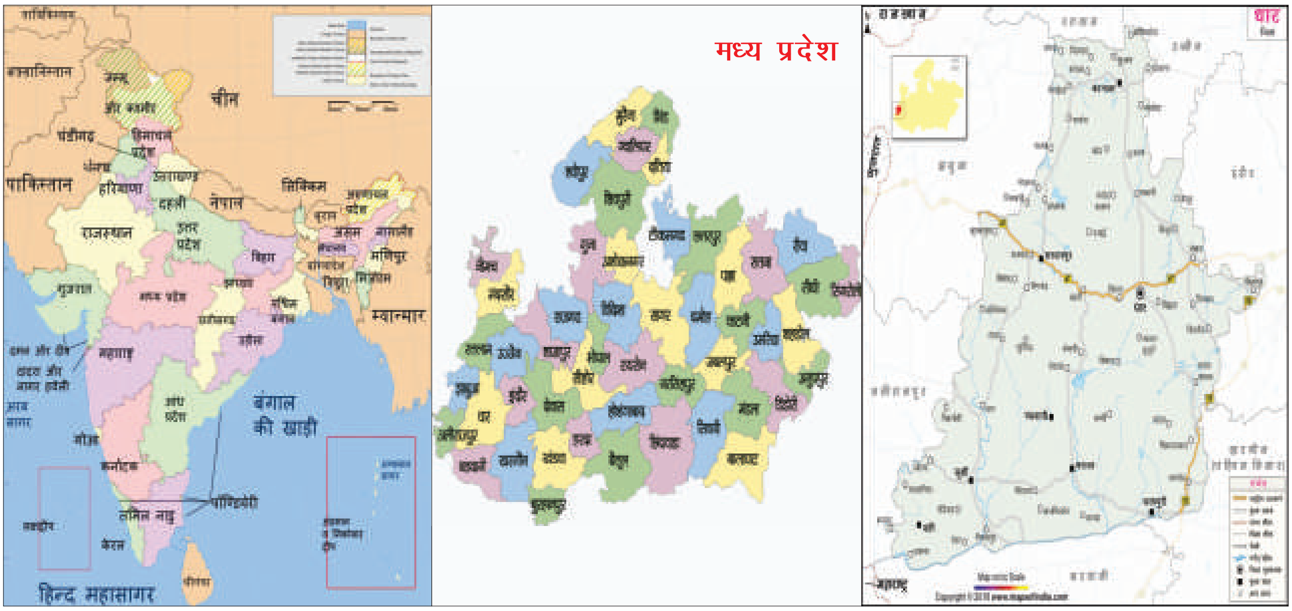


चित्र–1: अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र ( भारत, मध्य प्रदेश तथा धार )

सारिणी–1: पवित्र वनों की सूची व संक्षिप्त विवरण

| क्र0सं0 | पवित्र वन का नाम गाँव व तहसील का नाम | |
|---|---|---|
| 1 | **पूवाई माता, बोडगाँव, डही**<br>कई सालों से पूवाई माता को माताजी की तरह पूजते हैं, पूवाई माता जी की पूजा रक्षाबंधन के दिन की जाती है और पूजा में नारियल, मिठाई, लड्डू बकरी (पाट) आदि का प्रसाद चढ़ाया जाता है। पूरे गाँव में प्रसाद बांटी जाती है तथा पूरा समाज मिलकर इसकी पूजा करते हैं और खेती–बाड़ी, सुख–शांति आदि अनेक मान्यताओं का मनन करते हुए ग्रामीण लोग पूवाई माताजी की पूजा करते हैं। | |
| 2 | **आई देवी, पिपलुद, डही**<br>आज से कई वर्ष पहले आई देवी के बारे में नायक लोग मानने लगे। पहले नायक लोगों के घर स्थाई नहीं हुआ करते थे। आज यहा तो कल कहीं और माता जी को सर्वप्रथम रूप से नायक जनजाति जानने लगी। सबसे पहले चोरी करना सीखा और उस चोरी में सफल होने की मन्नत मांगने लगे। जैसे–जैसे वे ऐसे कार्य में सफल होने लगे वैसे ही उनकी आई देवी के प्रति आस्था और बढ़ने लगी। उसके बाद उन्होने किसी को मारना किसी के घर चोरी करना आदि सभी कार्य करने के पहले माताजी से मन्नत (मनोकामना) मांगते और फिर वह कार्य आरम्भ करते है। | |
| 3 | **भुवाड़ा बाबा, नरझली, डही**<br>भुवाडा बाबा एक बड़ी पहाड़ी पर स्थित है। पास में एक तालाब और सड़क है। डही तहसील से लगभग 5 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। जो लगभग 15 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है। यहाँ पर सात मोहल्ले गाजगोट और कंकरिया के लोगों के द्वारा पूजा करते हैं। यहाँ के निवासियों ने बताया कि हमारे पूर्वज यहाँ पर बसने आये थे। उस समय इस जगह पर बहुत घना जंगल था। इसमें विभिन्न प्रकार के जानवर रहते थे। जंगली जानवरों से रक्षा के लिये भुवाडा बाबा स्थापित किये गये थे। और आज भी कोई बीमार या मुसीबत में आता है तो बाबा से मन्नत मांगते हैं और वह पूरी हो जाती है। | |
| 4 | **छेन्यारी माता, अतरसुमा, डही**<br>पवित्र वन एक विशाल पहाड़ पर बसा है। यह लगभग 8 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैला हुआ है। यह तहसील से 5 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के लोगों ने बताया है कि हमारे पूर्वज यहाँ पर पूजा करते आये हैं और अब हम भी यहाँ पूजा करते हैं। अगर बरसात सही समय नहीं आये तो इस देवी की पूजा करते है। छेन्यारी माता का त्यौहार जून में होने के कारण इसकी पूजा की जाती है। | |

| | | |
|---|---|---|
| 5 | **सात मात्रा, टेमरीया, डही**<br>पवित्र वन के चारो ओर पहाड़ियाँ एवं मध्य में होकर नाला बहता है। इसी नाले के किनारे पर देवीय स्थान है जो डही से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ के निवासियों तथा पुजारी ने बताया की हमारे पूर्वज इनकी पूजा पाठ करते आये एवं हम भी इसकी पूजा–पाठ करते आ रहे हैं। सात मात्रा या देवी का त्यौहार हरियाली नवमी (श्रावण महीने की शुक्ल पक्ष की नवमी) पर देवी माँ का विशेष श्रृंगार किया जाता है तथा पूरा गाँव और आसपास के गाँव के लोग इकट्ठे होते हैं और प्रसाद ग्रहण करते एवं मन्नत पूरी होने पर प्रसाद चढाते हैं। | |
| 6 | **कुहलिय (पानी की खान), खयडी, डही**<br>पवित्र वन के एक तरफ हथनी नदी तथा दूसरी ओर बहुत गहरा नाला है। यहाँ के जुवानसिंह डावर ने बताया कि हमारे पिता जी यहाँ पर खेती के लिए बसे थे। नदी और नाला बहुत गहरा होने के कारण पीने का पानी लाने में बहुत ज्यादा कठिनाई होती थी। तो हमारे पूर्वजों ने यहाँ पर नमी होने के कारण यहाँ पर गड्डा खोदा तब से लेकर अभी तक हमारी और पशुओं के पीने का पानी की यहीं से पूर्ति होती है। नदी और नाले में पानी खत्म होने पर यहाँ पर नहीं होता है। इस पवित्र स्थान पर दिवसा बाबा के समय पूजा की जाती है तथा किसी को कोई जानवर दिखाई देता है तब अगरबत्ती लगा देते हैं। | |
| 7 | **कवल बाबा, खयडी, डही**<br>कवल बाबा नदी के किनारे स्थित है। जिसका एक किनारा धार जिला एवं दूसरा किनारा अलिराजपुर में है। यहाँ के जामसिंह और बूटसिंह डावर ने बताया कि पहले तीन देवता एक साथ रहते थे। तीनों मिलकर चुखा(चावल) बनाकर खा रहे थे, तब तीनों देवताओं के हाथों से एक–एक कवल(निवाला) नीचे गिर गया जो एक नदी में तथा दो किनारे के ऊपर गिरे जो आज भी वैसे ही दिखाई देते हैं। अगर कोई उन्हें भला–बुरा कहे तो उन्हें कुछ नुकसान पहुँचता है। कवल बाबा के पहाड़ की चोटी पर एक अंकोली का पेड़ है। कवल बाबा के पूजा–पाठ दिवसा बाबा के समय बुधवार को अगरबत्ती, दीपक और टीके–टीले लगाकर करते हैं। | |
| 8 | **मुरसा डाबरा (खुटजा), खयडी, डही**<br>मुरसा डाबरा या बाब मुरासदे हथनी नदी के किनारे स्थित है। यहाँ के सुरसिंह पिता जुवानसिंह ने बताया कि मुरसा डाबरा एक देव स्थान है। यहाँ पर सौन्दर्य से सम्बन्धित जैसे– सोना, चांदी जो भी वस्तु मांगो वह मिल जाती थी। पहले दिन निवेदन करते हैं कि मुझे कल ये वस्तु चाहिए वह वहाँ उस स्थान पर मिल जाती थी और अपना काम होने पर वह वस्तु उसी जगह पर रख देते अभी ऐसा नहीं होता है क्योंकि एक व्यक्ति वस्तु ले गया और वापस नहीं लौटाया, उस दिन से वस्तु अभी नहीं मिलती है। इस पवित्र देव की पूजा पाठ दीपावली के समय अगरबत्ती, दीपक और नारियल चढाकर करते हैं। | |

| | | |
|---|---|---|
| 9 | **भीलट बाबा, उमरकुआ, डही**<br>भीलट बाबा के कुछ ही दूरी पर एक तालाब और पक्की सड़क है। यहाँ के प्रताप और मेहताप ने बताया है कि हमारे पूर्वज पूजा करते थे। वहाँ पर हम भी पूजा करते हैं अगर किसी को सर्प दिखाई दे तो हम दूसरे दिन बाबा के स्थान पर अण्डा का भोग देते हैं तो वह फिर से दिखाई नहीं देता है। बाबा से मन्नत मांगते हैं कि हमारे पशुओं की रक्षा करें। भीलट बाबा का त्यौहार हम छोटी दीपावली के चौवदस के दिन घोडा–ढाबा चढ़ाते तथा मुर्गे की बलि दी जाती है। यहाँ पर शाम को मेले का आयोजन होता है। | |
| 10 | **कुन्दीराणा बाबा, पलासी, डही**<br>कुंदीराणा बाबा की भौगोलिक स्थिति के पास तालाब तथा हाइवे रोड निकलती है। इसके पास ही पहाड़ है, जो तिखली बयड़ी के नाम से जाना जाता है। कुन्दीराणा बाबा को हमारे पूर्वजों द्वारा बताया गया कि यदि श्रावण मास में बारिश नहीं होती है तब इसकी पूजा अर्चना करते हैं जिससे बारिश अच्छी होने लग जाती है तभी से ऐसी प्रथा आज तक चली आ रही है। कुंदीराणा बाबा देव की पूजा बरसात के दिनों में की जाती है। यदि बारिश श्रावण मास में नहीं होती तो इसकी पूजा अर्चना करने से बरसात हो जाती है, ऐसी मान्यता यहाँ के लोगों की है। इस देवीय स्थान पर मदिरापान एवं बलि चढ़ाना सख्त मना है। इसलिये इसे बहुत पवित्र देव स्थल माना जाता है। | |
| 11 | **गलिया बाबा, कुर्ड़दिग्पूरा, कुक्षी**<br>गलिया बाबा के पवित्र स्थल के पास ही सड़क एवं नाला निकला हुआ है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 12 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के स्थनीय निवासी मगन राठी और सरदार पटेल ने बताया अगर किसी का पशु गुम होने पर गलिया बाबा के थान (स्थान) जाकर मन्नत लेने से वह वापस मिल जाए तो जो भी मन्नत पूरी होने पर बकरा या मुर्गे, नारियल आदि की बलि दी जाती है। इस प्रकार लोगो की आस्था बाबा के प्रति और अधिक हो गयी है। | |
| 12 | **भीलट बाबा, कुर्ड़दिग्पूरा, कुक्षी**<br>भीलट बाबा पहाड़ी पर स्थित है। कुछ ही दूरी पर नाला है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 3 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के स्थानीय श्री भीमसिंह राठी ने बताया है कि भीलट बाबा मनुष्य और उनके पालतू पशुओं की सर्प तथा अन्य जंगली जानवरों से रक्षा करता है। भीलट बाबा के स्थान पर मुर्गी के अण्डे रख दिये जाते हैं तथा वहाँ पर फिर साँप दिखाई नहीं देते है। | |

| | |
|---|---|
| 13 | **बाप विसर, ढोल्या, कुक्षी**<br><br>बाप विसर के पास ही बहुत ही सुन्दर कलाकृति बने हुए है, जो नारियल बावड़ी, सात बारनीय, वाक कराई माता तथा चमार बावड़ी जो बहुत ही सुन्दर दिखाई देती है। बाबा विसर के पास प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क तथा हथनी नदी है जो लगभग एक किलोमीटर दूरी पर है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 15 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के स्थानीय निवासी श्री सोनार सौलंकी, गेनसिह सौलंकी और थानसिंह चौगड़, बुधेसिंह चौगड़ बताते हैं कि पहले यह राजवाड़ा था। यहाँ राजा का राज चलता था। बाप विसर है जो बहुत पहले से लोग मानते है और यह मानते हैं कि राजा रोज नर्मदा (नदी) में स्नान के लिए जाता था। उसके बाद पूजा–पाठ करके ही खाना खाता था। एक दिन नर्मदा माँ प्रसन्न होकर राजा को एक ज्वार की पूली (गठरी) लाने को बोला राजा ज्वार की गठरी लेकर नर्मदा माँ के आंचल पहुँचा तो नर्मदा माँ ने वहाँ से गठरी छोड़ी जो ढोल्या गाँव में निकली तब से यह स्थल बाप विसर के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर लकवा व अन्य बीमारी के लोग दूर–दूर से आते हैं और स्नान से उनकी बीमारी ठीक हो जाती है। यहाँ का पवित्र जल घर ले जाकर पूरे घर व पशुओं में छिड़कते हैं। जिससे अनेक प्रकार की बीमारी नहीं होती। |
| 14 | **वाक कराई माता, ढोल्या, कुक्षी**<br><br>वाक कराई माता पवित्र वन एक नाले तथा ऊँचे पहाड़ पर स्थित है। इसके लगभग एक किलोमीटर दूर से हथनी नदी निकलती है। यहाँ वर्षा भर पर्याप्त हरियाली रहती है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 15 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। वाक कराई माता के बारे में यहाँ के स्थानीय श्री धनसिंह मुझाल्दा ने बताया है कि वर्षो पहले से बीमार लोग मंगलवार के दिन स्नान करने आते है। ऐसी मान्यता है कि जो लोग 9 मंगलवार स्नान के पश्चात् ठीक हो जाते तो नारियल, मिठाई, बकरा आदि का प्रसाद चढ़ाते हैं। वाक कराई माता का त्यौहार हरियाली नवमी (श्रावण महीने की शुक्ल पक्ष की नवमी) पर देवी माँ का विषेष श्रृंगार किया जाता है तथा पूरे गाँव के लोग इकट्ठे होकर प्रसाद ग्रहण कर अपनी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। |
| 15 | **अन्धियारा बाबा, आवली, कुक्षी**<br><br>पवित्र वन चारों तरफ से पहाड़ियों से घिरा है तथा मध्य में होकर नाला बहता है। थोड़ी दूरी पर नदी निकलती है। नाले के किनारे पर अन्धियारा बाबा का स्थान स्थित है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 12 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।<br><br>यहाँ के स्थानीय निवासी श्री जेराम पिता डुमसिंह डोडवे ने बताया कि हमारे पूर्वज इनकी पूजा पाठ करते आये और हम भी इन बाबा की पूजा करते हैं। यदि कोई जानवर या कोई साधन गुम हो जाये तो इन बाबा से मन्नत लेते हैं और पूरी होने पर प्रसाद चढ़ाते हैं। अन्धियारा बाबा का त्यौहार छोटी दीपावली के समय करते हैं। जिन लोगों ने मन्नत ले रखी है, वह इस दिन बकरे की बलि देते हैं। |

| | | |
|---|---|---|
| 16 | **बाबा मालदेव, खेरवा, कुक्षी**<br>इस पवित्र स्थान के समीप एक बहुत बड़ा तालाब है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।<br>यहाँ के स्थानीय निवासी श्री रतनसिंह पुजारा और विजय रावत पटेल बताते हैं कि हमारे दादा परदादा के समय से यहाँ परंपरा चली आ रही है और आज भी हम पूजा पाठ करते हैं। जिससे पशुओं की रक्षा हो तथा वे सुरक्षित रहें। यहाँ के लोग बताते हैं कि इसका त्यौहार दीपावली के समय जैसे ही मन्नत पूरी होती है तब रीति–रिवाज के अनुसार लकड़ी, रस्सी, नारियल बकरा, मुर्गे, सिंदूर चढ़ाते हैं और प्रसाद सभी को बाँटते हैं। पूरा गाँव मिलकर इस कार्यक्रम का आयोजन करता है। | |
| 17 | **कोलिया नाच, खेरवा, कुक्षी**<br>कोलिया नाच चारो ओर से पहाड़ से घिरा है, बीच का स्थान समतल है। जिससे वर्षा के समय चारों ओर से पानी इकट्ठा हो जाता है। इसके नजदीक ही भीलट देव पवित्र वन भी स्थित है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।<br>यहाँ प्रचलित किंवदंती के अनुसार बहुत समय पहले यहाँ कोलियाँ (सियार) का झुण्ड़ (समूह) रहता था। वह यहाँ पर आकार नाचते थे और आज भी इसके निशान स्पष्ट दिखाई देते हैं। इसी कारण इस पवित्र वन को कोलियाँ नाच नाम से जाना जाता है। | |
| 18 | **काणा राक्षस, खेरवा, कुक्षी**<br>काणा राक्षस पवित्र वन नाले के बीचो–बीच स्थित है तथा चारों तरफ पहाड़ से घिरा है और यहाँ से पाँच किलोमीटर पर भात्यारी नामक गाँव में सोलर पैनल उर्जा का कारखाना लगा हुआ है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।<br>यहाँ के स्थानीय लोगों श्री रतनसिंह डोडवे (पुजारी) व श्री विजय रावत पटेल ने बताया है कि एक राक्षस गाँव के ओझर के जंगल में छिपने आया था; जो 'झिरी' ओझर कहलाती है। झिरी सात खटिया के रस्सी के बराबर गहरी और इसमें लगभग एक हजार फीट पानी है। यह बताते हैं कि राक्षस के सिर में खरगोश के बराबर जुएं थे। जिस स्थान पर वह जुएं मारता था। वहाँ पर आज भी धब्बे स्पष्ट दिखाई देते हैं तथा उसकी बनायी गयी भोजन सामग्री के चिन्ह हैं। ओझर में बहुत से देवी–देवताओं के डर से वह झिरी में कूद गया। ऐसा विश्वास किया जाता है कि झिरी में आज भी एक हजार फीट पानी है। यहाँ पर पानी हमेशा रहता है। | |

| | | |
|---|---|---|
| 19 | **पेखारिया देव, खेरवा, कुक्षी**<br>यह नाले के समीप स्थित है तथा पास ही एक विशाल पहाड़ है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के निवासी श्री रतनसिंह डोडवे व श्री विजय रावत पटेल ने बताया कि पहले चोरी बहुत होती थी। तो लोग पेखारीय देव का नाम लेकर चोर पर तीर चलाते तो निशान सही लग जाता था। यदि शत्रु या चोर पलटवार कर रहा हो तो इस देव का नाम लेते ही तीर रूक जाती थी। प्राचीन समय से आज तक पेखारिया देव के प्रति बहुत अधिक आस्था है। यहाँ के वासी आज भी इस देव की पूजा अर्चना करते है। | |
| 20 | **वाण्डर झिरी, खेरवा, कुक्षी**<br>वाण्डर झिरी पवित्र वन एक बड़े पहाड़ पर स्थित है। इस पहाड़ की चोटी पर पानी का भंडार है। जो वर्षा जल से भरा रहता है। यहाँ तक कि इसकी तलहटी में स्थित नाले का पानी खत्म होने पर भी इसमें पानी बना रहता है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के स्थानीय लोगों में यह मान्यता है कि कमजोर तथा लकवा जैसी बीमारी होने पर यहाँ पर नहाने के लिए आते और ठीक होने पर भोग देते हैं। | |
| 21 | **लकड़खाई देव, खेरवा, कुक्षी**<br>इसकी भौगोलिक स्थिति के चारों तरफ पहाड़ है। इसका पवित्र स्थान नाले के किनारे पर है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के निवासी बताते हैं कि उनके पूर्वजों के समय से ही यह परम्परा चली आ रही है। हर साल पूरे गाँव के लोग एकत्रित होकर लकड़खाई देव से अपने खेतों में अच्छी पैदावार होने की कामना करते हैं। इसके अतिरिक्त अपने खेतों से फसल की चोरी और बीमारी आदि से रक्षा के लिए लकड़खाई देव से प्रार्थना करते हैं। | |
| 22 | **जोड़िया कलम, खेरवा, कुक्ष**<br>जोड़िया कलम पवित्र वन खेतों के मध्य स्थित है। यहाँ पर पीपल, नीम, बरगद, सेमल तथा पिपरी के विशाल वृक्ष है। जिनके तने आपस में मिलकर विशाल स्वरूप बनाते हैं। इसकी घनी छाव में अनेक पक्षी आवास तथा भोजन प्राप्त करते हैं। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित हैं। यहाँ के स्थानीय निवासी श्री विजय रावत और गाँव के पुजारी श्री रतनसिह डोडवे ने बताया की हमारे पूर्वजों द्वारा पूजा अर्चना की जाती रही हैं। ऐसी मान्यता है कि जोड़िया कलम पेड़ के ऊपर पत्थर फेकते हैं अगर पत्थर पेड़ के ऊपर से निकलता है तो वह वंश (जन्म लेने वाला बच्चा) बालक होता है तथा नहीं निकलता है तो बालिका का जन्म होता है। ऐसी पौराणिक एवं आज भी मान्यताएं प्रचलित हैं। | |

| | | |
|---|---|---|
| 23 | **बरी देव, खेरवा, कुक्षी**<br>बरी देव पवित्र वन में अनेक बड़े वृक्ष हैं। इसमें बरगद, पीपल के कई विशाल वृक्ष है। इस पवित्र वन से होकर एक नाला भी गुजरता है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के स्थानीय निवासी श्री रतनसिंह पुजारा ने बताया है कि पूर्वजों के द्वारा स्थापित तथा संरक्षित पवित्र वन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अल्प वर्षा की स्थिति में बरी देव से अच्छी वर्षा हेतु प्रार्थना करने पर बारिश होने लगती है। | |
| 24 | **नाहरजो बाबा, खेरवा, कुक्षी**<br>नाहरजो बाबा पवित्र वन पेड़ तथा बड़े–बड़े पत्थर हैं। इसमें से एक नाला निकलता है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के स्थानीय निवासी श्री रतनसिंह पूजारा बताते हैं कि हमारे पूर्वजों के अनुसार गाँव और पशुओं की रक्षा के लिए इस पवित्र वन में पूजा अर्चना की जाती है। अपनी मन्नत पूरी होने पर ग्रामजन वर्ष भर पूजा–पाठ करते हैं। | |
| 25 | **मूलडोगरा देव, खेरवा, कुक्षी**<br>मूलडोगरा देव वन बहुत बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है जिसमें लगभग तीन गाँव सम्मिलित है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। मूलडोगरा देव के बारे में यहाँ के स्थानीय श्री संकलासिंह रावत से यह ज्ञात हुआ कि पहले इस क्षेत्र में बहुत घना जंगल था। जिसमें विभिन्न प्रकार के प्राणी एवं पौधों की प्रजातियाँ पायी जाती हैं। प्राचीनकाल से ही यहाँ लाल पहाड़ पर हमेशा पानी भरा रहता है तथा सर्दी, गर्मी, बरसात तीनों ऋतुओं में पानी समाप्त नहीं होता है। लकवा तथा अन्य बीमारी के लोग स्नान करने से ठीक हो जाते हैं। | |
| 26 | **वाक कराई माता, पाडल्या, कुक्षी**<br>वाक कराई माता पवित्र वन हरियाली से परिपूर्ण है। यहाँ के मुख्य स्थान पर एक जल स्रोत है जो बहुत गहरी है तथा इसमें वर्षभर पानी रहता है। यह पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 15 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।<br>यहाँ के स्थानीय निवासी श्री बुधेसिंह चौगड़ ने बताया कि कई वर्षों से इस देवी में आस्था रखते हैं। यहाँ पर बीमार लोग सात या नौ मंगलवार को स्नान करते हैं। इससे उनकी बीमारी ठीक हो जाती है। यहाँ लकवा तथा अनेक प्रकार की बीमारी से मुक्ति मिलती है। | |
| 27 | **बाबा देव, पाडल्या, कुक्षी**<br>बाब देव पवित्र वन पहाड़ी पर स्थित है। यहाँ पर एक हनुमान मंदिर है तथा कुछ ही दूरी पर नाला बहता है। यह पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 16 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के स्थानीय निवासी श्री बुधेसिंह ने बताया हमारे पूर्वजों द्वारा इस बाबा देव की पूजा की जा रही है तथा आज भी हम लोग पूजा करते आ रहे हैं। हमारे पशुओं तथा हमारे खुशहाल | |

| | | |
|---|---|---|
| | जीवन की मनोकामना के लिये इस बाबा देव की पूजा अर्चना करते हैं। बाबा देव का त्यौहार छोटी दीपावली के चौदस के रोज मनाया जाता है। इस दिन घोड़ा–ढाबा चढ़ाते हैं। अगरबत्ती, नारियल, दीपक, सिन्दूर तथा मुर्गे की बलि दी जाती है। | |
| 28 | **देहमाता, आगर, कुक्षी**<br>देहमाता पवित्र वन सघन वन क्षेत्र के बीचो–बीच स्थित पहाड़ की गुफा के अंदर स्थित है। आसपास जंगली जीवों का रहवास है। यह पवित्र वन तहसील मुख्यालय से 30 किलोमिटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के स्थानीय निवासी श्री जामसिंह डोडवे ने बताया है कि प्रत्येक चौदस और "छोटी दीपावली" पर खुशहाल जीवन की कामना के लिए मनाते हैं। यहाँ पर पानी का एक बड़ा कुण्ड़ है। उसके पास ही एक पुरानी गुफा में देहमाता के नाम से स्थापित स्थान है। उसमें एक रोशनी आती वह किसी को पता नही वह कहाँ से आती है। देहमाता की त्योहार यहाँ के लोग छोटी दीपावली (चौदस) के दिन मन्नत पूरी होने पर हर साल मनाते हैं। उस दिन मन्नत पूरी करते हैं। देहमाता का पूजन के दिन रात 2–3 बजे से लोगों का आना शुरू हो जाता है। सबसे पहले देहमाता को शुद्ध जल से स्नान कराते हैं तथा उसके बाद कुमकुम, चावल तथा दीपक से पूजन करते हैं तथा मन्नत के अनुसार नारियल और बकरे का भोग देते हैं। माता को दारू(मदिरा) भी चढ़ाते हैं। उसके बाद मांदल और ढोल लाने के बाद मांदल और ढोल बजाकर नाचते हैं तथा बहुत सारे लोग एकत्रित होते हैं। देहमाता का मान जैसे रखते, वैसे ही उसकी मन्नत उतारते हैं। जैसे मन्नत पूरी करने के लिए चूल चलने का कार्य भी होता है। चूल के लिए एक गहरी नाली खोदते, उसमें पुजारी इमली(टेमेरिन्डस इण्डिका) की लकड़िया जलाते हैं। मन्नत रखने वाला उस चूल में खुले पाँव चलता है। यहाँ एक विशेष बात यहाँ पर लोग बड़े प्रेम पूर्वक नाचगाना एवं मन्नत पूरी करते हैं। मदिरापन का सेवन होने के बावजूद भी यहाँ किसी प्रकार का वाद–विवाद नहीं होता है। | |
| 29 | **बैल बाबा, कुर्दूजेता, कुक्षी**<br>बैल बाबा पवित्र वन वैसे तो जंगली वृक्षों से समृद्ध है, परन्तु मुख्य स्थान पर पक्का मंदिर स्वरूप निर्मित है। इसके पास ही सड़क निकलती है। यह पवित्र वन तहसील मुख्यालय से 27 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के स्थानीय लोग बताते हैं कि बैल बाबा की स्थापना हमारे पूर्वजों ने की थी; तब से लेकर बैलबाबा में आस्था रखते हैं। अगर किसी का पशु बीमार हो जाता है, तो बैल बाबा की मन्नत लेते हैं कि मेरा पशु तीन दिन में अच्छा हो जाएगा तो मैं मन्नत पूरी करूंगा। तत्पश्चात् तीन दिन तक बैल को जोतते नहीं है। अगर तीन दिन में पशु अच्छा हो जाता है। तो मन्नत पूरी करते हैं। शुद्ध जल से बैल बाबा को स्नान कराकर तेल, सिन्दूर लगाकर, अगरबत्ती, लगाकर दीपक लगाते हैं और नारियल चढ़ाकर बकरे की बलि दी जाती है। | |

| | | |
|---|---|---|
| 30 | **खेड़ादेवी, देवधा, कुक्षी**<br>खेड़ादेवी माँ का पवित्र वन स्थल पहाड़ पर स्थित है और कुछ ही दूरी पर सड़क निकली हुई है। यह पवित्र वन तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के स्थानीय निवासी श्री दिलीप सोलंकी ने बताया है कि खेड़ादेवी की पूजा अर्चना वर्षों से हमारे पूर्वजों द्वारा की जाती रही है। यहाँ पर अच्छी बारिश होने की कामना करते हैं। खेड़ादेवी माँ का पूजन श्रावण माह की अमावस्या के समय किया जाता है। | |
| 31 | **गलबाबा, केसवी, धार**<br>गलबाबा पवित्र वन एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। जो वन सम्पन्न क्षेत्र है। विशाल वृक्षों के बीच गलबाबा का मंदिर स्थापित है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 36 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के लोग बताते हैं कि इस पर्व को हमारे पूर्वज मनाते आ रहे हैं और हम भी प्रतिवर्ष होली दहन के दूसरे दिन गलबाबा का त्यौहार मना रहे हैं। जनजाति के लोग किसी कार्य या बीमारी से छुटकारे के लिए गलबाबा देव का मान लेते हैं। ठीक या कार्य पूर्ण होने पर मन्नत उतारते हैं। इस त्यौहार पर होली दहन के दूसरे दिन अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। मन्नत उतारने के लिए ढोल लेकर आते हैं। शाम को 3–4 बजे कार्यक्रम प्रारम्भ होता है। बहुत सारे लोग इस कार्यक्रम में सम्मिलित होते हैं। गलबाबा की थपना (स्थान पर गन फिरने के लिए चार खूंटे या लकड़ी) गाड़ते हैं। इनकी ऊँचाई लगभग बीस फुट ऊँची होती है। गलबाबा का रंग सिन्दूरी होता है। जिसे प्रतिवर्ष रंगते हैं तथा जिसने मान ले रखी होती है उसको वहीं पर स्नान करवाते हैं। उसके बाद उसके पूरे शरीर में हल्दी लगाते हैं। आँखों में काजल लगाते हैं। लाल व पीले रंग की पगड़ी बांधते हैं। फिर उसे गल पर सीढी के द्वारा चढाते हैं। दो–तीन लोग उसके साथ गल पर चढते हैं। उसे आड़ी लकड़ी के सहारे जमीन की ओर मुँह करके बांधते हैं। उस लकड़ी को एक रस्सी से बांधकर नीचे जमीन पर खड़े लोग सात बार उसे घुमाते हैं। फिर उसे छोड़कर जमीन पर उतारते हैं। उसके बाद ढोल बजाकर नाचते हैं तथा नारियल व बकरे का भोग देते हैं। इस प्रकार मनोकामना पूरी करते हैं। | |
| 32 | **चौसठ जोंगनी बावन भैरव बाबा, लुनेरा, धार**<br>चौसठ जोंगनी बावन भैरव बाबा पवित्र वन के बीच स्थित है। पहुँच मार्ग पक्की सड़क है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के स्थानीय निवासी श्रीदादाराम ने बताया कि वह बहुत पहले से पूजा करते आ रहे हैं। अगर किसी को बुरी हवा लग जाती तो इस पवित्र स्थान पर एक विलायती इमली (एडनसोनिआ डिजीटाटा) के तने में कील ठोंककर तथा मनोकामनाएं पूर्ण होने पर प्रसाद चढ़ाते हैं। | |

| | | |
|---|---|---|
| 33 | **सात मात्रा, बाकानेर, धार**<br>सात मात्रा पवित्र वन नदी के किनारे पर स्थित है। इस दृष्टि से यह महत्वपूर्ण स्थान है। ये पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के निवासी श्री सरदार पटेल देवी माँ के बारे में बताते हैं कि यहाँ पर बीमार लोग यदि सात या नौ मंगलवार को स्नान कर लें तो उनकी बीमारी ठीक हो जाती है। जैसे लकवा तथा अनेक प्रकार की बीमारी से मुक्ति मिलती है। | |
| 34. | **मेंढ़ा बाबा, कलादा, मनावर**<br>मेंढ़ा बाबा पवित्र वन नदी के किनारे पर स्थित है। कुछ ही दूरी पर सड़क निकली हुई है। यह पवित्र वन तहसील मुख्यालय से लगभग 12 किलोमिटर दूरी पर स्थित है। यहाँ के स्थानीय निवासी श्री राजेन कनेल बताते हैं कि हमारे पूर्वज इस बाबा की पूजा करते थे और हम भी इसकी पूजा अर्चना बारिश होने के पश्चात् फसल अच्छी होने की कामना के लिए करते हैं और पालतू जानवर, बैल, गाय, भैंस आदि के स्वस्थ रहने की कामना करते हैं। | |

3. **परिणाम एवं विश्लेषण**—इन जनजातियों की दैनिक जीवन शैली तथा रीति–रिवाज प्रकृति सम्मत है। प्रकृति संरक्षण के अनेक उदाहरण इनके जीवन में आसानी से देखे जा सकते हैं। प्रकृति प्रेम व आस्था इनके जीवन का अभिन्न अंग है। इनके लगभग समस्त त्यौहार भी प्रकृति प्रेम व नैसर्गिक हर्षोल्लास से भरा होता है। अपने जीवन के प्रत्येक भाग को प्रकृति के साथ बड़े उत्साह से जीते हैं। इस अध्ययन के दौरान कुल 34 पवित्र वनों का विस्तृत अध्ययन किया गया। पवित्र वनों में मिलने वाली वनस्पतियों तथा प्राणियों को सूचीबद्ध किया गया। वनस्पतियों में प्रमुखतः 56 वृक्ष, 09 झाड़ी, 14 लताएं, 30 शाक सहित 01 कवक की प्रजाति देखने को मिली। इसी प्रकार प्राणियों में 48 जलीय तथा स्थलीय 23 पक्षी, 12 सरीसृप, 07 स्तनधारी तथा 06 कीट, प्रजाति प्रमुखतः देखने को मिली। इस प्रकार कुल 110 वनस्पति तथा 48 प्राणियों को अंकित किया गया। पवित्र वनों में उपस्थित वनस्पतियों को काटना प्रतिबंधित होता है। कुछ पादप प्रजाति तो पूर्णतः प्रतिबंधित है चाहे वह कहीं भी है।

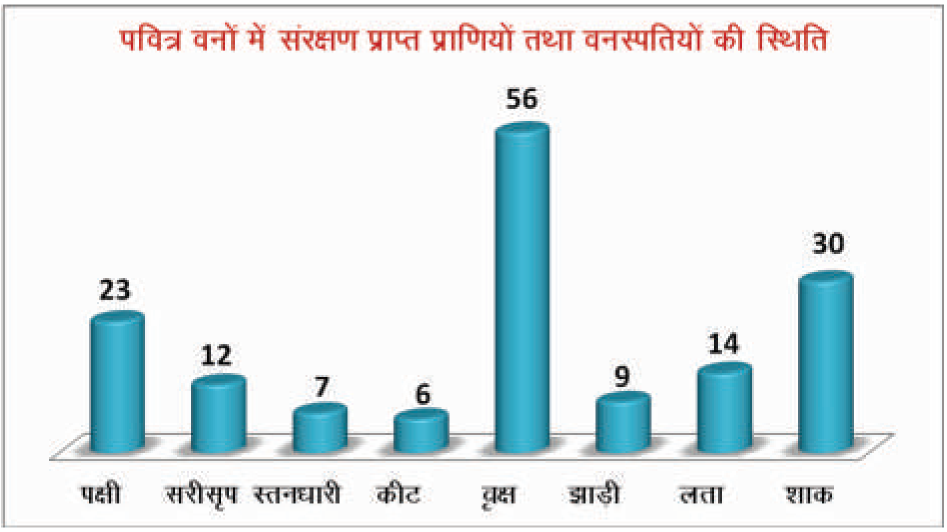

सारिणी–1: अध्ययन के दौरान पवित्र वन में पाये जाने वाले प्रमुख पादपों की सूची

| क्र.सं. | वानस्पतिक नाम तथा कुल | स्थानीय नाम | स्वभाव; औषधि उपयोग |
|---|---|---|---|
| 1. | *एबेल्मॉस्कस मेनीहॉट* (एल.) मेडीक.<br>माल्वेसी | जंगली भिण्ड़ी | शाक; इसके तने से रेशे निकालकर रस्सी बनाई जाती है। इसकी कोमल पत्तियों की सब्जी बना कर खायी जाती हैं। |
| 2. | *एब्रस प्रिकेटोरियस* लिन.<br>फेबेसी | जुरूम, गुंजा | लता; इसकी पत्तियों का उपयोग सर्पविष उपचार में प्रयोग किया जाता है। |
| 3. | *एबुटिलोन इण्डिकम* (एल.) एस. डब्ल्यू<br>माल्वेसी | कंघी | शाक; इसके तने से टाटले और विभिन्न प्रकार के कृषि से सम्बंधित साधन बनाने में प्रयोग किया जाता है। |
| 4. | *अकेशिया केट्चू* (एल. एफ.) विल्ड<br>मिमोसी | खयरीया, खैर | वृक्षः कृषि से संबंधित यंत्र एवं पत्तियों को पशुओं के चारे के रूप में। |
| 5. | *अकेशिया ल्यकोफ्लोइया* (रॉक्स) विल्ड<br>मिमोसी | रिन्झा | वृक्षः इसकी छाल का प्रयोग चर्मरोग निवारण में करते हैं। पत्तियों का पशुओं के पसंदीदा चारे के रूप में उपयोग। |
| 6. | *अकेशिया नीलोटिका* (एल.) डेलीले वाइल्ड एक्स<br>मिमोसी | बाबलिय, बबूल | वृक्ष; इसकी लकडियाँ घर तथा कृषि उपकरण बनाने में प्रयोग करते है। |
| 7. | *एकाइरेन्थस एस्पेरा* लिन्.<br>एमेरेन्थेएसी | झिंझण्डा, अपामार्ग | शाक; इसकी पत्तियों को पीसकर लगाने से चर्मरोग ठीक हो जाता है। |
| 8. | *एक्टीनोप्टेरिस रेडीयटा* (स्वार्टज) लिंक<br>टेरिडेसी | भूई ताड़ | शाक; (फर्न); इसका उपयोग घाव भरने के लिए किया जाता है। |
| 9. | *एडनसोनिआ डिजीटाटा* लिन.<br>बॉम्बेकेसी | विलायती इमली | वृक्षः इसके पके फल खाने में प्रयोग किये जाते है। नर्म पत्तियों की सब्जी बनाकर भी खाया जाता है। |
| 10. | *एल्बिजिया प्रोसेरा* ( रॉक्स.) बेन्थ.<br>मिमोसी | गुराड़, सफेद सिरीश | वृक्षः इसकी लकड़ी कृषि के यंत्र बनाने एवं घर में उपयोगी होती है। |
| 11. | *ईगल मारमीलोस* (एल.) कोरिया<br>रूटेसी | बिली, बिल्वा | वृक्ष; इसके छाल और बीजों का उपयोग लकवा बीमारी के उपचार में किया जाता है। |
| 12. | *आइलेन्थस एक्सेल्सा* रॉक्सबर्ग<br>सीमरोउबेसी | वोल्लू , महानीम | वृक्षः इसके तने से ढोल, मन्दल बनाने में उपयोग। |
| 13. | *अलान्जियम साल्विफोलियम* (एल. एफ) वेंग<br>कोरनेसी | वाकली, अंकोल | वृक्षः इसके बीज विषविकार निवारण में उपयोगी है। |
| 14. | *एलो वेरा* (एल.) बुरम.एफ<br>लिलिएसी | पाठी, ग्वारपाठी | शाक; इसका गूदा पेट संबंधित रोग को ठीक करता है। |
| 15. | *एमॅरेन्थस स्पाईनोसस* लिन.<br>एमेरेन्थेसी | चौलाई भाजी | शाक; इसकी पत्तियों का प्रयोग चर्म रोग उपचार में किया जाता है। शरीर की जलन में चौलाई का काढ़ा बनाकर पीने से आराम मिलता है। पत्तियों का उपयोग सब्जी बनाने में किया जाता है। |
| 16. | *एन्ड्रोग्राफिस पेनीकुलाटा* (बुरम. एफ)वालिच एक्स नीच<br>एकेन्थेसी | भूई लिम | शाक; इसका सम्पूर्ण भाग बुखार में उपयोगी होता है। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 17. | *एन्नोना रेटीकुलेटा* लिन.<br>एन्नोनेसी | रामफल | वृक्ष; इसके परिपक्व फल खाये जाते है। |
| 18. | *एन्नोना स्क्वेमोसा* लिन.<br>एन्नोनेसी | सीताफल | वृक्ष; इसके पके फल खाने से दस्त(अतिसार) में आराम मिलता है। |
| 19. | *एनॉजिसस लेटिफोलिया* (डी.सी.) वेलिच. एक्स. बेडोने कोम्ब्रेटेसी | धावड़ा | वृक्षः इसकी छाल का प्रयोग श्वासरोग उपचार में करते है। |
| 20. | *एगेरिकस बाईस्पोरस* (जे.ई. लेन्ज.) इमबेच एगेरीकेसी | सन्ती,<br>मशरूम | कवक; सब्जी बनाने में प्रयोग किया जाता है। |
| 21. | *आरजीमोन मेक्सिकाना* लिन.<br>पेपवेरेसी | कास्टूला,<br>सत्यनाशी | शाक; इसकी कोमल पत्तियों का रस दो–दो बूंद डालने से नेत्र रोग दूर होता है। |
| 22. | *अरजिरिया नेरवोसा* (बुरम.एफ) बोजर.<br>कोन्वोल्वूलेएसी | तामासीर,<br>विधारा | लता; इसकी जड़ का प्रयोग शरीर की दुर्बलता दूर करने में किया जाता है। |
| 23. | *एस्पेरेगस रेसीमोसस* वाइल्ड<br>लिलिएसी | दसमूल,<br>सतावर | लता; दूधारू पशुओं के दुग्ध वृद्धि हेतु इसका उपयोग पशुचारे के रूप में करते हैं। |
| 24. | *एजाडिरक्टा इण्डिका* ए. जूस.<br>मेलिएसी | नीमड़ा, नीम | वृक्ष; नीम की निबौली खाने से अजीर्ण नष्ट होती है। |
| 25. | *बाम्बुसा बाम्बोस* (लिन.) वोस<br>पोएसी | बाँस | झाड़ीः घर के विभिन्न साधन बनाये जाते हैं। |
| 26. | *बेलेनाईटीस इजिप्टिएका* रॉक्सबर्ग<br>बेलेनाईटेसी | हींगनीय,<br>हींगोट | वृक्ष; इसके बीज खाने से खांसी और दमा रोग ठीक होते है। इसकी शाखायें बागड़ बनाने के काम आती है। |
| 27. | *बॉहिनिआ परप्यूरिया* लिन.<br>सिसलपीनिएसी | कोलीयर,<br>केवलर | वृक्षः इसकी नर्म पत्तियों और फूल की सब्जी बनाकर खाई जाती है तथा छाल का प्रयोग घाव भरने में किया जाता है। |
| 28. | *बॉहिनिआ रेसीमोसा* लामार्क<br>सिसलपीनिएसी | अस्था, सोना पत्ती | वृक्षः इसकी पत्तियों का उपयोग मुह के छालों को ठीक करने में किया जाता है। फली को भूनकर खाया जाता है। |
| 29. | *बॉरहाविया डिफ्यूजा* लिन.<br>निक्टेन्थेसी | पुनर्नवा,<br>साढी | शाक; इसकी जड़ मुँह के छालों और मूत्रविकार (काढ़ा बना कर पीने से) के रोगों के उपचार में तथा इसकी पत्तियों को सब्जी के रूप में उपयोग किया जाता है। |
| 30. | *बॉम्बैक्स सीबा* लिन.<br>बॉम्बेकेसी | सेमला,<br>सेमल | वृक्ष; इसके तने से बड़े ढोल, मांदल बनाये जाते हैं। पत्तियाँ पशुचारे के रूप में उपयोगी होती है। |
| 31. | *बोरासॅास फ्लबेलीफेर* लिन.<br>एरेकेसी | ताड़ | वृक्षः इसका रस पीने से पथरी की बीमारी ठीक हो जाती है। |
| 32. | *ब्राइडेलिया रिटूसा* (एल.)स्पिंग्र<br>यूफोरबिएसी | अगना,<br>कसई | वृक्ष; इसकी छाल का उपयोग मधुमेह रोग के उपचार में करते हैं तथा पके फलों को खाया जाता है। |
| 33. | *बुकनानिया लॉन्जन* स्प्रेंग<br>एनाकार्डिएसी | चार, चरोली | वृक्ष; इसकी छाल का प्रयोग पेट से संबंधित रोग उपचार में करते हैं। इसके परिपक्व फल खाये जाते हैं। |
| 34. | *ब्यूटिया मोनोस्पर्मा* (लेमार्क) ट्यूब<br>फेबेसी | खाखरी,<br>पलाश | वृक्ष; यह दैनिक जीवन में सर्वाधिक काम आने वाला वृक्ष है। इसकी पत्तियों से दोने–पत्तल बनाये जाते हैं। |
| 35. | *कैलोट्रोपिस प्रोसरा* (एट.) आर. बर<br>एस्क्लेपीएडेसी | अकर्डिया,<br>ऑक | झाड़ी; इसकी पत्तियॉ पानिये(बाटी) बनाने में प्रयोग की जाती है। |
| 36. | *कार्डिओस्पर्मम हेलिकाकाबम* लिन.<br>सेपिण्डेसी | कनफुटी | लता; इसकी पत्तियों का प्रयोग पशुओं के चर्मरोग के उपचार हेतु करते हैं। |
| 37. | *केरिसा केरेण्डस* वाइट.<br>एपोसायनेसी | करौंदा | वृक्ष; इसके बीज पेट दर्द के उपचार हेतु करते हैं। इसके पके फल खाये जाते हैं और कच्चे फल सब्जी बनाकर खाने में प्रयोग किये जाते हैं। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 38. | कैसिया ऑक्सिडेटॅलिस लिन. सिसलपिनेएसी | जंगली ग्वारफली | शाक; इसकी कोमल पत्तियों को पीसकर ताजे घाव पर लेप करने से घाव जल्दी भर जाता है। |
| 39. | *केसिया टोरा* लिन. सिसलपिनेसी | पूवाड़िया, पावर | शाक; इसकी पत्तियों को सब्जी के रूप में प्रयोग किया जाता है। |
| 40. | *चिनोपोडियम एल्बा* लिन. *चिनोपोडियसी* | बथुआ | शाकः इसकी कोमल पत्तियों को सब्जी के रूप में प्रयोग किया जाता है। |
| 41. | *सिस्सामपेलोस परेइरा* (लिन)वार हीरसूट मेनीर्स्पमेसी | फाट, पथ | लता; इसकी जड़े विष को खत्म करने में प्रयोग की जाती है। |
| 42. | *सिलीस्ट्र पैनिकुलेटा* वाइल्ड सिलीस्ट्रेसी | मालकंगनी | लता; इसकी पत्तियाँ और कच्चे फल की सब्जी बनाकर खायी जाती है। |
| 43. | *क्लोरोफाइटम ट्यूबेरोसम* (रॉक्स.) बेकर. लिलिएसी | धवली मुसली, सफेद मुसली | शाक; इसकी जड़ को बलवर्धक के रूप में प्रयोग करते हैं। पत्तियों को बांधने से जोड़ो और पीठ के दर्द में आराम मिलता है। इसकी जड़ सफेद प्रदर और वात रोगों के उपचार में किये जाते हैं। |
| 44. | *सिसस क्वाड्राएन्गुलेरिस* लिन. विटेसी | हरजोड़ | लता; अगर किसी जानवर की हड्डी टूट जाये तो पैराकली बांधने तथा खिलाने से जुड़ जाती है। |
| 45. | *क्लेरोडेन्ड्रेम मुल्टीफ्लोरम* (बुरम. एफ) कुन्टजे वरबिनेसी | अरनी, वरनीया | झाड़ी; इसकी कोमल पत्तियों को निचोड़कर संक्रमण (कीड़े) होने पर इसका रस लगाने से ठीक हो जाता है। पशुओं का पसंदीदा चारा होता है। |
| 46. | *क्लाइटोरिया टरनेशिया* लिन. फेबेसी | अपराजिता | लता; इसकी पत्तियों तथा बीजों का उपयोग पशुओं के पाचन संबंधी समस्याओं के निवारण में किया जाता है। |
| 47. | *क्लेरोडेन्ड्रेम सेर्राटम* (एल.) मुन वरबिनेसी | भारंगी | झाड़ी; इसकी पत्तियों और जड़ का प्रयोग बुखार और शरीर के दर्द में करते हैं। |
| 48. | *कोकसिनिया इण्डिका वाइट एण्ड अर्न* कुकरबिटेसी | कुन्दरू | लता; इसकी कोमल पत्तियाँ और कच्चे फल सब्जी के रूप में उपयोग किये जाते हैं। |
| 49. | *कॉर्डिया डाइकोटोमा* जी. फोरस्टर बोरेजिनेसी | गयदी, गूंदी | वृक्ष; इसकी पत्तियों को चोट पर लगाने से ठीक हो जाते हैं। इसकी छाल को पशुओं की हड्डी टूटने पर उपचार में किया जाता है। इसकी कोमल पत्तियों, फूल, फल की सब्जी बनाकर खाये जाते हैं। |
| 50. | *कॉर्डिया मेक्लिओडिई* (ग्रीफ.) हुक एफ. एण्ड थमसन बोरजिनेसी | दहिमन, दधिपलाश | वृक्ष; इसका सम्पूर्ण (पंचांग) भाग चर्म रोग और विषविकार के रोग में उपचार किया जाता है। |
| 51. | *कुरकुलीगो ऑरचीआईडेस* गायर्थ हाईपोक्सीडेसी | काली मुसली | शाक; इसकी जड़ों का प्रयोग सफेद धातु रोग के उपचार में किया जाता है। |
| 52. | *साईनोडोन डाक्टियाना* (एल.) पेयर्स पोएसी | सेड़ा खड़ | शाक; बिच्छू के काटने के स्थान पर चबाके लगाने से ठीक हो जाती है। पशुओं का पसंदीदा चारा होता है। |
| 53. | *धतूरा मेटल* लिन. सोलेनेसी | धतूरा | शाक; इसकी ताजी कोमल पत्तियों का रस दुखती आँखों पर लेप करने से दाह मिट जाती है। |
| 54. | *डलबर्जिया सिस्सू* रॉक्स. फेबेसी | शीशम | वृक्ष; इसकी पत्तियों को चर्मरोग में प्रयोग करते हैं। तने का उपयोग मकान तथा कृषि से संबंधित यंत्र बनाने में प्रयोग करते हैं। |
| 55. | *डलबर्जिया पेनीकुलाटा* रॉक्स. फेबेसी | पथरली, धोबिन | वृक्ष; इसकी छाल का प्रयोग कृमिरोग एवं अतिसार में करते हैं। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 56. | *डाइक्रोस्टेकिस सिनेरीया* (एल.) वाइट एण्ड अरन. मिमोसी | आरी | झाड़ी; इसकी पत्तियाँ बकरियों का पसंदीदा चारा है। इसकी लकड़ी हल्की होने के कारण हल जोतने के लिए जोड़ी बनायी जाती है। |
| 57. | *डाईजेरा मुरीकेटा* (एल.)मार्ट एमरेन्थेसी | गुन्जरा | शाक; इसकी जड़ों को चबाने से मुँह के छाले ठीक हो जाते हैं। |
| 58. | *डायोस्पाइरोस मेलेनोजाइलोन* रोक्सब. इबेनेसी | टेमरू, टेमरी | वृक्ष; इसकी पत्तियों के बीच तम्बाकू रखकर बीड़ी बनाकर धूम्रपान किया जाता है। |
| 59. | *ठहर्शिया लिइवीस* रॉक्सबर्ग बोराजिनेसी | तमोलिया | वृक्ष; इसकी पत्तियों और छाल को उबालकर नहाने और पिलाने से पीलिया की बीमारी ठीक हो जाती है। |
| 60. | *इनीकोस्टेमा एक्जीलर* (लम.) ए. रायनाल जेन्टीनेसी | डेढ पत्ती, नाई कई | शाक; इसकी जड़ पशुओं के दस्त रोग के उपचार मे उपयोग किया जाता है। |
| 61. | *ईलीटेरीया एक्यूलीस* (एल.एफ.) लिन्डायू एकेन्थेसी | बीस मूल, पत्थरटटा | शाक; इसकी पत्तियों का उपयोग पशुओं की खुजली के रोग में करते हैं। |
| 62. | *इथ्रिइना इण्ड्का* लिन. बोराजिनेसी | कुतेड़ा | वृक्ष; इसकी लकड़ी का उपयोग अनेक धार्मिक अनुष्ठान सहित दीपावली पूजन में किया जाता है। |
| 63. | *यूफोरबिया हिरटा* लिन. यूफोरबिएसीं | दूधलिया, दूधी | शाक; इसका सम्पूर्ण भाग(पंचांग) यकृत विकार उपचार में प्रयोग किया जाता है। पशुओं का पसंदीदा चारा एवं दूध वृद्धि के लिये इसे खिलाया जाता है। |
| 64. | यूफोरबिया नेरिफोलिया लिन. यूफोरबियसी | थुहर | वृक्ष; इसे घर और खेती की रक्षा के लिए चारों और बागड़ के रूप में लगाया जाता है। इसके दूध से मछली को बेहोश करने में प्रयोग किया जाता है। |
| 65. | *फाइकस बेंगालेंसिस* लिन. मोरेसी | वड़, बड़, बरगद, | वृक्ष; इसकी पत्तियों को सूजन पर घी लगाकर बांधने से शीघ्र ही लाभ होता है। |
| 66. | *फाइकस विरेन्स* ऐट. मोरेसी | पिपरी | वृक्ष; इसकी लकड़ी कृषि संबंधित यंत्र बनाने में प्रयोग की जाती है। |
| 67. | *फाइकस रेलिजिओसा* लिन. मोरेसी | पीपला, पीपल | वृक्ष; इसकी छाल को पानी में पीसकर फोड़े–फुन्सियों पर लगाने से वह ठीक हो जाते हैं। |
| 68. | *फाइकस रेसिमोसा* लिन. मोरेसी | गुलर | वृक्ष; इसके परिपक्व फल खाये जाते हैं। |
| 69. | *गरूगा पिन्नाटा रॉक्स.* बर्सेरेसी | काकड़, केकड़ | वृक्ष; इसकी लकड़ी का उपयोग अनेक धार्मिक अनुष्ठानों सहित शादी में इसकी लकड़ी का मण्डप बनाया जाता है। |
| 70. | *ग्लोरिओसा सुपरबा* लिन. लिलिएसी | कलिहारी | शाक; इसकी पत्तियों को निचोड़कर चर्मरोग पर लगाने से ठीक हो जाते है। |
| 71. | *हेलिक्टेरेस आईजोरा* लिन. *माल्वेसी* | अटवाडिया मरोड़फली | शाक; इसकी फली का उपयोग पशुओं के पेट सम्बंधित रोग के उपचार में किया जाता है। |
| 72. | *ग्रेविया टीलियफोलिया* वहल टिलिएसी | धामन | वृक्ष; धामन की लकड़ी का उपयोग मकान एवं कृषि से संबंधित यंत्र बनाने में होता है। इसके पके फल खाने में प्रयोग किये जाते हैं। |
| 73. | *हार्डविकिया बिनाटा* रोक्स. सिसलपिनिएसी | अन्धान, अंजन | वृक्ष; इसकी पत्तियाँ पशुओं का पसंदीदा चारा एवं दूध वृद्धि के लिए खिलाया जाता है। इसके तने से मकान एवं अन्य यंत्र बनाये जाते हैं। |
| 74. | *हेमीडेस्मस इण्डिकस* (एल.) आर.बी. एपोसाइनेसी | वाता, अन्नतमूल | लता; इसकी बेल को टोकरी एवं रस्सी बनाने में प्रयोग किया जाता है। इसकी कोमल पत्तियाँ शाक बनाने में प्रयोग किये जाते हैं। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 75. | *होलराहेना एन्टीडीसेंटेरीका* (रोथ) ए.डीसी<br>एपोसाइनेसी | कुड़ा, कुड़ी | वृक्ष; इसके तने से दूध मथने के यन्त्र बनाये जाते हैं। |
| 76. | *होलोप्टेलीया इन्टेग्रीफोलिया* (रोक्सब) प्लांच<br>अल्मेसी | ओहला, बन्दर की रोटी | वृक्ष; इसकी शाखाओं को पानी में डालने से उपस्थित मछलिया बेहोश हो जाती हैं, जिससे ग्रामीण उन्हें आसानी से पकड़ लेते हैं। |
| 77. | *जेट्रोफा कर्कस* लिन.<br>यूफोरबिएसी | अगरवेण्डिया, रतनजोत | झाड़ी; इसका तेल लगाने से फोड़ा–फुन्सी ठीक हो जाते हैं। |
| 78. | *लॉनिया कोरोमेण्डेलिका* (हॉट.) मेयर<br>एनाकार्डिएसी | मोयन, मोयनी | वृक्ष; इसकी छाल का प्रयोग चोट लगने पर किया जाता है। इसकी लकड़ी का उपयोग अनेक धार्मिक अनुष्ठानों सहित शादी पूजन में किया जाता है। |
| 79. | *लेन्टाना केमरा* लिन.<br>वरबेनेसी | झाया | झाड़ी; इसकी शाखाओं से अनाज संग्रहण के लिये मोटी (कोठी) बनायी जाती हैं और घर की दीवार बनाने में उपयोग होता है। |
| 80. | *लेप्टाडिनिया रेटिकुलाटा* (रेट्स) वाइट एण्ड अरन्.<br>एस्क्लेपिएडेसी | कड़वा डोडी | लता; इसकी कोमल पत्तियों की शाक बना के खाये जाते हैं। |
| 81. | *मैटेन्स इमरजीनाटा* (वाइल्ड) डींग होयू<br>कैलास्ट्रैसी | बैंकल | वृक्ष; इसकी शाखाएं बागड़ के रूप में प्रयोग किये जाते हैं। |
| 82. | *मधुका इण्डिका* जे. एफ. मेलिन<br>सेपोटेसी | मवड़ा, महुआ | वृक्ष; इसके फूल खाने एवं बीज का तेल निकालकर खाये जाते हैं। |
| 83. | *मार्टिनिआ एन्नुआ* लिन.<br>मार्टिनीएसी | बिछिया | शाक; इसकी बीज के अन्दर के भाग को खाया जाता है। |
| 84. | *माइमोसा पुडिका* लिन.<br>मिमोसी | राजली, लाजवन्ती | शाक; इसके बीज को कूटकर घाव पर लगाने से घाव जल्दी भर जाता है। |
| 85. | *मेनिल्कारा हेक्सेन्ड्रा* (रॉक्स.) डुबार्ड<br>सेपोटेसी | राइना, खिरनी | वृक्ष; इसके पके फल खाने के उपयोग में लाये जाते है। इसकी लकड़ी ईधन के रूप में प्रयोग की जाती है। |
| 86. | *मोमोरडिका डाइआइका* रॉक्सबर्ग<br>कुकरबिटेसी | कंटला | लता; इसकी जड़ का प्रयोग बिच्छूदंश के उपचार में किया जाता है। |
| 87. | *मोरिंगा ओलिफेरा* लामार्क<br>मोरिंगेसी | सेंगू, सहजन | वृक्ष; इसकी हरी पत्तियाँ एवं फली को सब्जी बनाकर खाते हैं। पशुओं का पसंदीदा चारा है। |
| 88. | *मिटरागायना परविफोलिया रॉक्स.*<br>*रूबेसी* | कलम | वृक्ष; इसकी लकड़ी का उपयोग अनेक धार्मिक अनुष्ठानों सहित इसकी शाखाओं को इन्दल पर्व में पूजा जाता है। |
| 89. | *मेरिण्डा सिट्रीफोलिया* लिन.<br>रूबेसी | हल्दिया, आल | वृक्ष; इसकी पत्तियाँ श्वांस से संबंधित रोग में प्रयोग करते हैं। |
| 90. | *मुकूना प्रूरीयन्स (एल.) डीसी.*<br>फेबेसी | कवच | लता; इसके बीज को बिच्छू विष का प्रभाव कम करने में प्रयोग करते हैं। |
| 91. | *निक्टेनथीस अरबर ट्रीस्टीस* लिन.<br>निक्टेनथेसी | सिरली, हरसिंगार | शाक; इसकी पत्तियों का काढ़ा बनाकर पीने से सर्दी–खांसी में आराम मिलता है। |
| 92. | *उजिनिया ऊजिनेन्सिस* (रॉक्स) होच | तिन्सा, सदन | वृक्ष; इसकी छाल का प्रयोग निमोनिया रोग के उपचार में किया जाता है। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | फेबेसी | | |
| 93. | *फीनिक्स एक्यूलीस* बच–हम. इक्स. रॉक्सबर्ग<br>एरेकेसी | सिन्दी | वृक्ष; इसकी पत्तियाँ (रेकिस) से टोकरी और टाटले बनाये जाते हैं। |
| 94. | *फाइलेन्थस एमरस* स्कुमस एण्ड थोनन. यूफोरबियसी | भूई आंवला | शाक; इसकी कोमल पत्तियाँ पीसकर घाव पर लगाने से घाव शीघ्र भर जाता है। |
| 95. | *पिथेसेलोबियम डल्से* (रॉक्स.) बेन्थम<br>मिमोसी | चवल्या, जंगल जलेबी | वृक्ष; इसके फल खाने में और हरी पत्तियाँ पशुओं के चारे में प्रयोग में आती हैं। |
| 96. | *प्लम्बेगो जाइलानिका* लिन.<br>प्लम्बेजिनेसी | चितावल, चित्रक | झाड़ी; इसके दूध का लेप करने से खुजली में आराम मिलता है। |
| 97. | *पोंगामिया पिन्नाटा* (एल) पियरे<br>फेबेसी | करंज, कन्जी | वृक्ष; इसकी टहनी को ब्रश के रूप में प्रयोग किया जाता है। |
| 98. | *सोरलिया कोरलीफोलिया* लिन.<br>फेबेसी | बकुची, बावची | शाक; इसके बीज और पत्तियों का प्रयोग चर्म रोग के उपचार में किया जाता है। इसके बीजों को पीसकर गांठ पर बांधने से गांठ बैठ जाती है। |
| 99. | *शोरिया रोबस्टा* रथ<br>डिप्टेरोकार्पेसी | साल्वा, साल | वृक्ष; इसकी जड़ और छाल का प्रयोग किसी घाव वाले स्थान पर करते हैं तो घाव शीघ्र भर जाता है। इसकी पत्तियों को शारीरिक दर्द होने पर बांधने से आराम मिलता है। |
| 100. | *स्टर्कुलिया यूरेंस* रोक्स.<br>स्टरर्कुलिएसी | कुल्लू | वृक्ष; इसके बीज और गोंद को खाया जाता हैऔर इसके छाल को पानी में डालने से मछलियां मूर्छित हो जाती हैं। जिससे मछलियों को आसानी से पकड़ लेते है। |
| 101. | *साइजियम कुमीनी* (एल.) स्कील्स.<br>मिर्टेसी | जांबू, जामुन | वृक्ष; इसके फल खाने में उपयोगी होते हैं। पाँव में जख्म हो जाये तो जामुन की गुठली को पानी में पीसकर लगाने से अच्छा हो जाता है। |
| 102. | *टेमेरिन्डस इण्डिका* लिन.<br>सिसलपियेनेसी | आमली, ईमली | वृक्ष; इसके फल खाने में उपयोगी होते हैं। इसकी पत्तियां पशुओं के चारे के रूप में उपयोगी होती है। |
| 103. | *टेक्टोना ग्राण्डिस* एल. एफ.<br>वरबेनेसी | सागड़ा, सागौन | वृक्ष; इसकी पत्तियाँ पत्तल बनाने में और विभिन्न प्रकार के त्यौहारों में उपयोगी और मकान के छत या छाव के लिए प्रयोग होती है। |
| 104. | *टेफ्रोसिया परपूरिया* (एल.) पेयरस्<br>फेबेसी | पेखारी, सरफोंका | शाक; इसकी जड़ का प्रयोग दन्त रोग के उपचार में किया जाता है। |
| 105. | *टर्मिनेलिया बेलिरीका* (गयर्थ) रॉक्सबर्ग.<br>काम्ब्रेटेसी | बहेड़ा, | वृक्ष; इसके फल खाये जाते हैं तथा छाल को मुँह में चूसने से खाँसी ठीक हो जाती है। |
| 106. | *ट्राईकोसेन्थेस ब्रेक्टेएटा* (लाम.) वाइट<br>कुकरबिटेसी | घवलिया, लाल इन्द्रायण | लता; इसकी पत्तियाँ और फल पशुओं का दूध लाल हो जाने पर इसे खिलाने से ठीक हो जाती है। इसके बीज चक्कर आने पर खिलाने से चक्कर ठीक हो जाता है। |
| 107. | *टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया* (वाइल्ड) मीइरस<br>मेनीर्स्पमेसी | गुलवेल, गिलोय | लता; गिलोय की बेल को गर्म पानी मे उबालकर छान कर पीने से बुखार के रोगी ठीक हो जाते है। |
| 108. | *ट्राइडेक्स प्रोकुमबेन्स* लिन.<br>एस्टेरेसी | खरवेडिया परदेशी लंगरी | शाक; पशुओं का पसंदीदा चारा है। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 109 | *ट्रिबुलस टेरेस्ट्रिस* लिन. जाइगोफाइलिएसी | गोखरू | शाक; इसके बीजों को पानी में पीसकर त्वचा रोगों पर लेप करने से रोग ठीक होता है। |
| 110 | *जिजिफस मारीटियना* लेमार्क रेहम्नेसी | बेर | वृक्ष; इसके तने की गाँठ को चबाने से खाँसी ठीक हो जाती है। |

**सारिणी–2: पवित्र वनों में पाये जाने वाले प्रमुख प्राणियों की सूची**

| क्र. | सामान्य नाम | वैज्ञानिक नाम |
|---|---|---|
| 1. | शिकरा | *एसीपिटर बैडियस* जीमेन |
| 2. | खलड़ाई, भारतीय मैना | *एक्रिडाकेथेरस ट्रिसटिस* लिन. |
| 3 | सौ बीगी | *एजिथिना टिफिना* लिन. |
| 4. | उल्लू, घूघू | *ब्यूबो –ब्यूबो* लिन. |
| 5. | गाय बगुला, मवेशी बगुला | *बुबुल्कस आईबीस* लिन. |
| 6. | बड़ा सफेद बगुला | *कॉसमेरोडियस एल्बस* लिन. |
| 7. | चनक, चीना बटेर, लावरी | *कॉटर्निक्स–कॉटर्निक्स* लिन. |
| 8. | वुडपेकर | *क्रिसोकोलेप्टस फेस्टिवस* बोडर्ट |
| 9. | भीमराज, केन्चेला | *डिक्रूरायेडी पराडाइसियस* लिन. |
| 10 | पत्तिंग | *मिरोप्स ओरिएंटेलिस* लेथम |
| 11. | कोयल | *यूडीनेमस स्कोलोपेसिय* लिन. |
| 12. | फुलसंघनी | *नेक्टारिनिया एसियाटिका* |
| 13 | किलकिला, करोना, खिटखिला | *हेलसायोन स्मिरनेंसिस* लिन. |
| 14. | घरेलू गौरेया, छोटी चिरी, घीमचेडी | पेसर डोमेस्टिकस लिन. |
| 15. | बुलबुल, गुलदम | *पिक्नोनोटस कैफर* लिन. |
| 16 | बया, सोनचिरी, हिंगलाधरी | *प्लोसियस फिलीपाइनस* लिन. |
| **17** | हँसता कबूतर, छोटा फाक्ता, हुल्गी | स्ट्रैप्टोपीलिया सैनेगेलेंसिस लिन. |
| 18 | टिटहरी | *वेनेलस मालाबेरीकस* बोड्डर्ट |
| 19 | महोख, डुच्चा | *सेन्ट्रोपस साइनोन्सिस* स्टफेन्स |
| 20 | रिवर लेपविंग | *वेनेलस डुवाउसेली* लेसन |
| 21 | तीतर | *फ्रैंकोलिनस ग्युलैरिस* टॅमिन्क |
| 22 | दूधराज | *टरप्सिफोन पेराडाईजि* लिन. |
| 723 | हुदहुद | यूपुपा ईपोप्स लिन. |
| 24 | नेवला | *हरपेस्टिस स्मिथी* ग्रे |
| 25 | भेड़िया | *केनिस आरियस* लिन. |
| 26 | जंगली बिल्ली | फेलीस चाउस लिन. |
| 27 | लोमड़ी | *वुल्पस बेगालेंसिस* शव |
| 28 | गिलहरी, बुटी | *फुनाम्बुलस पल्मरूम* लिन. |
| 29 | सैसलिया, खरगोश | *लेपस रुफीकाडेटम* (एफ.) कुवीयर |
| 30 | साहली, साही | *हिस्ट्रिक्स ल्यूकुरा* केरर |
| 31 | गुरफड, गोह | *वेरेनस वेगालेन्सिस* डवडीन |
| 32 | गिरगिट | *कैमिलियन केलकेरेटस* लाउरेन्टी |
| 33 | कछुआ | *लिसेमिस पंक्टाटा पंक्टाटा* लेसेपेडी |
| 34 | छिपकली | *हेमीडेक्टाईलस फ्लेविरिडिस* रूपेल |
| 35 | कैमलिऑन | *केलोटिस राउक्सी* कुवीयर |

| | | |
|---|---|---|
| 36 | अजगर | *पाईथन मॉलुरस* लिन. |
| 37 | मुलेण्डा, दोमुह | *एरिक्स जानी* रूसेल |
| 38 | पानी का साँप | *जेनोक्रोफिस पिस्केटर स्चनीडर* |
| 39 | मगर | *क्रोकोडाईलस पेलुस्ट्रिस* लेसन |
| 40 | धामन | *टायस म्यूकोसस* लिन. |
| 41 | नाग | *नाजा–नाजा* लिन. |
| 42 | नगर बाबनी | *लेमप्रोफोलीस गुइचेनोटी* ग्रे |
| 43 | मुहल, मधुमक्खी | *एपिस लिथोहमिया* लिन. |
| 44 | भंवरा | *जायलोकोपा* |
| 45 | क्रिमसन रोज | *पैचलियोप्टा हेक्टर* लिन. |
| 46 | लाईम बटरफ्लाई | *पेपिलियों डेमोलियस* लिन. |
| 47 | कॉमन एमीग्रेट | *केटोपसिलीय पोमाना* फेब्रियसियस |
| 48 | कॉमन क्रो(कौआ) | *यूप्लोईया कोर* क्रैमर |

4. **निष्कर्ष**–इस शोध की अवधि में धार जिले के विभिन्न ग्रामों में भ्रमण किया गया, जिसमें कुल 34 प्रमुख पवित्र वन पाये गये। इसके अतिरिक्त अनेक छोटे–छोटे पवित्र स्थल भी देखने को मिले। यह देखा गया कि स्थानीय समुदाय में इन पवित्र वनों के प्रति संरक्षण एवं सम्मान का स्थाई भाव समाहित है वे इसमें साक्षात ईश्वर का वास मानते हुये इनके संरक्षण की सामाजिक परंपरा को जिम्मेदारी पूर्वक निभाते हैं। जैसा कि हम जानते है कि वर्तमान समय में मानवीय वास स्थल निरंतर बढ़ता और वन क्षेत्र उसी गति से सिकुड़ता जा रहा है। ऐसे में इस प्रकार की व्यवस्था वास्तव में मानवीय अस्तित्व के लिये अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान समय विकास व विनाश का पर्याय बनकर रह गया है। इसके बीच असंतुलन की स्थिति निर्मित हो गई है। पवित्र वनों की परंपरा आने वाली पीढ़ियो में प्रकृति संरक्षण हेतु प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

## संदर्भ


1. भकत, आर0 के0 एवं सेन यू0 के0 (2008) इथनोबॉटनिकल प्लांट कन्जरवेशन थ्रू सेक्रेड ग्रोव्स, ट्राइब्स एण्ड ट्रायबल्स (स्पेशल अंक) मु0पृ0 55–58।
2. बसु, आर0 (2000) स्टडीज ऑन सेक्रेड ग्रोव्स एण्ड टेबूस इन पुरूलिया, इण्डियन फोरेस्टर, खण्ड–126, अंक–12, मु0पृ0 1309–1318।
3. मल्होत्रा, के0 सी0; स्टेन्ले, एस0; हेमाम, एन0 एस0 एवं दास, के0 (2001) बायोडायवर्सिटी कंजरवेशन एण्ड एथिक्सः सेक्रेड ग्रोव्स एण्ड पुल्स इन फुजिकी एन मेसर आर0 जे0(सम्पादक), बायोएथिक्स इन एशिया प्रोसिडिंग्स ऑफ द यूनेस्को एशियन/बायोएथिक्स कॉन्फ्रेन्स, मु0पृ0 338–345।
4. खुंबोग्यमायम, ए0 डी0; खान, एम0 एल0 एवं त्रिपाठी, आर0 एस0 (2005) सेक्रेड ग्रोव्स ऑफ मणिपुर, नार्थ ईस्ट इण्डियाः बायोडायवर्सिटी वेल्यू, स्टेट्स एंड स्ट्रेटेजीस फॉर देयर कंजरवेशन बायोडायवर्सिटी कंजरवेशन, अंक–14, मु0पृ0 1541–1582।
5. रामकृष्णन, पी0 एस0; सक्सेना, के0 जी0 एवं चन्द्रशेखर, यू0 (1998) कंजरविंग द सेकर्ड फॉर बायोडायवर्सिटी कंजरवेशन ऑक्सफोर्ड एण्ड आई0 बी0 एच0, नई दिल्ली, भारत।
6. यादव, एस0; यादव, जे0 पी0 एवं आर्य, वी0 एवं पंघाल, एल0 (2010) सेक्रेड ग्रेव्स इन कान्जरवेशन ऑफ प्लान्ट बायोडायवर्सिटी इन महेन्द्रगढ़ डिस्ट्रिक्ट ऑफ हरियाणा, इण्डियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज, खण्ड–9, अंक–4, मु0पृ0 693–700।
7. ब्रह्मा, जे0; सिंह, बी0 एवं मान्दल, टी0 (2014) सेक्रेड ग्रोव्स ऑन एनालिसिस मेड इन द कल्चरल परसफेक्टीवा जहनोवी ब्रह्मा एट अल, जर्नल ऑफ बायोलॉजी एण्ड सांइटिफिक ओपिनियन, खण्ड–2, अंक–5, मु0पृ0 320–323।
8. पाण्डे, बी0 पी0 (1989) प्लॉट्स ऑफ ह्यूमन किंग सेकर्ड प्लाण्ट ऑफ इण्डिया, डीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली, भारत।
9. अलक्रोन, जैन बी0 (1996) इज बायोडावर्सिटी कन्जर्वड बाय इण्डिजेनश पीपल ईथेनोबायोलॉजी इन ह्यूमन वेलफेयर (जैन एस0कल0इड0) डीप पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली, मु0पृ0 233–238।
10. तिवारी, बी0 के0; बारिक, एस0 के0 एवं त्रिपाठी, आर0 एस0 (1999) सेकर्ड फॉरेस्ट ऑफ मेघालय बायोलॉजिकल एण्ड कल्चरल डायवर्सिटी/रीजनल सेंटर नेशनल ए0 फारेस्टेशन एण्ड ईको डेवेलपमेंट बोर्ड एन0ई0एच0यू0 शिलांग, मु0 पृ0 1–120।
11. चौहान, ए0; त्रिपाठी, जे0 एवं डावर, एन0 (2017) धार, म0प्र0 जिले की जनजातियों के जीवन शैली में बहुउपयोगी ताड(बोरेसस फ्लेबेलीफर लिन्) की महत्ता का अध्ययन, खण्ड–5, अंक–1 मु0प्र0 61–66।
12. चौहान, ए0; त्रिपाठी जे0 एवं डावर, एन0 (2018) भुवाड़ा बाबा (धार, म0प्र0, भारत) पावन निकुंज में संरक्षित जैवविविधता का अध्ययन, खण्ड–6 अंक–1, मु0प्र0 1–11।

| अध्ययन के दौरान पवित्र वन में पाये जाने वाले प्रमुख पादप | | |
|---|---|---|
| मधुका इण्डिका | पोंगामिया पिन्नाटा | साइजियम कुमीनी |
| टेफ्रोसिया परपूरिया | जेट्रोफा कर्कस | अरजिरिया नरवोसा |
| कोकसिनिया इण्डिका | एस्पेरेगस रेसीमोसस | एन्ड्रोग्राफिस पेनीकुलाटा |